माहवारी पर चुप्पी तोड़ने की जरूरतः वंदना

नई दिल्ली, 28 मई (नवोदय टाइम्स): बायोडिग्रेडेबल सैनेटरी नैपकिन और रिसाइकिल और वैकल्पिक उत्पादों को उपलब्ध कराने के क्षेत्र में काफी प्रयास किए जा रहे हैं। विभिन्न छोटे निर्माताओं और गैर सरकारी संगठनों द्वारा मासिक कप के साथ ही ऐसे उत्पादों व नैपकिन को भी तैयार किया जा रहा है जो केले के फाइबर, जूट फाइबर, रिसाइकिलेबल क्लॉथ पर आधारित हैं। जरूरत है चुप्पी तोड़ने व जागरुकता पैदा करने की। उक्त बातें स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की संयुक्त सचिव वंदना गुरनानी द्वारा मासिक धर्म स्वच्छता पर एसौचेम द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान कहीं। इस कार्यक्रम का स्वागत भाषण एसौचेम के चेयरपर्सन अनिल राजपूत ने किया। वंदना गुरनानी ने कहा कि अनुमानित 1.13 लाख टन मासिक अपशिष्ट भारत में प्रतिवर्ष उत्पन्न होता है, ऐसे में बायोडिग्रेडेबल उत्पादों का उपयोग करने के साथ ही उन्हें अधिक प्रभावोत्पादक, पर्यावरण के अनुकूल और स्केलेबल उत्पाद बनाने की जरूरत है। इस अवसर पर सफदरजंग अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सुनील गुप्ता ने कहा कि सैनेटरी पैड को सस्ती व मामूली कीमत पर उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। वहीं प्रोक्टर एंड गैंबल की एसोसिएट डायरेक्टर व फैमिनिन केयर केटेगरी को लीड कर रहीं चेतना सोनी ने कहा कि समय की जरूरत है कि सरकार, सामाजिक संस्थाए और कॉर्पोरेट्स सभी हितधारकों के लिए सोंचे ताकि हर बेटी के लिए मासिक धर्म सौ फीसदी स्वच्छ हो। इस अवसर पर रवि भटनागर, सह-अध्यक्ष एसौचेम, प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्यांगना पद्मश्री गीता चंद्रन, यूनिसेफ इंडिया से फोरूख फोयोजत, आईसीआरडब्ल्यू की उप क्षेत्रीय निदेशक सुब्बालक्ष्मी नंदी ने भी अपने विचार रखे।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की संयुक्त सचिव वंदना गुरनानी।

परेशानियों पर की जाए बातः डॉ. कामना दत्ता

राममनोहर लोहिया अस्पताल में डिपार्टमेंट ऑफ ऑब्सट्रेक्टिक एंड गायनोलॉजिस्ट डॉ. कामना दत्ता ने कहा कि जब परिवार में छोटी-छोटी परेशानियों पर आपस में बात की जाती है तो मासिक धर्म पर क्यों नहीं। आज भी लोगों को लगता है कि महिलाएं मासिक धर्म के दौरान काम नहीं कर सकतीं लेकिन इस भ्रम को दूर करने की जरूरत है। इसीलिए मासिक धर्म को स्वच्छ भारत मिशन के साथ भी जोड़ा गया है।

चौंकाते हैं मासिक धर्म से जुड़े आंकड़ेः डॉ. मधुरिमा गुप्ता

इस मौके पर डॉ. मधुरिमा गुप्ता ने कहा कि फरीदाबाद के एक स्कूल में हिमोग्लोबिन की जांच के दौरान 10 फीसदी छात्राएं अधिक रक्तस्त्राव की वजह से एनीमिक थीं लेकिन उनके अभिभावकों द्वारा सिर्फ इसलिए उनको डॉक्टर के पास नहीं ले जाया जा रहा था क्योंकि वो अविवाहित थीं। ऐसे में जरूरी है कि मासिक धर्म को लेकर सदियों से बनाए गए टैबू को तोड़ने की।

मासिक धर्म को लेकर भ्रांतियों को दूर करने की जरूरत

नई दिल्ली ■ वार्ता

देश में इस समय 35. 5 करोड़ महिलाएं तथा लड़कियां माहवारी की आयु में हैं लेकिन आज भी यह विषय खुलकर बातचीत के लिए वर्जित माना जा रहा है जिसकी वजह से कम उम्र की लड़कियों में इसको लेकर अनेक भ्रांतियां हैं।

केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में संयुक्त सचिव वंदना गुरनानी ने मंगलवार को यहां एसोचैम की ओर से आयोजित कार्यक्रम" मेंस्ट्रूएल हाइजिन, नीड टू ब्रेक द साइलेंस एंड बिल्ड अवेयरनेस" में शिरकत करते हुए कहा कि मासिक धर्म एक बहुत ही सामान्य प्रकिया है लेकिन इसे लेकर आज भी अनेक भ्रांतियां है और कोई भी महिलाओं की इस सामान्य शारीरिक प्रकिया के बारे में खुल कर बातचीत नहीं करना चाहता है। इससे जुड़ी भ्रांतियों को दूर किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिवार सर्वेक्षण के आंकड़ों का हवाला देते हुए बताया कि माहवारी के दौरान शहरी क्षेत्रों की 78 प्रतिशत महिलाओं ने साफ-सफाई के तरीके अपनाने की बात स्वीकार की है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंकड़ा 48 प्रतिशत रहा।

उन्होंने कहा कि केरल, दिल्ली, सिक्किम और हरियाणा की 90 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वे सेनेटरी पैड्स इस्तेमाल करती हैं लेकिन बिहार में यह आंकड़ा 30 प्रतिशत ही पाया गया जो यह दर्शाता है कि अशिक्षा और जागरुकता की कमी तथा आर्थिक कारणों से महिलाएं इन पैड्स का इस्तेमाल नहीं कर पाई हैं। उत्तर प्रदेश में भी लगभग यही हाल है, जहां ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं इस विषय को लेकर चुप्पी साधना बेहतर मानती हैं।

उन्होंने कहा कि सेनेटरी पैड्स की कीमतें अधिक होने की वजह से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं इनका उपयोग नहीं कर पा रही हैं और आज भी वे पुराने कपड़ों का इस्तेमाल करने को मजबूर हैं जिसकी वजह से उन्हें कई बीमारियां घेर लेती हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के पैड्स बनाने वाली कंपनियों को इनकी कीमतें कम रखनी चाहिए ताकि ये हर किसी की पहुंच में रहे। सेनेटरी पैड्स को लेकर अधिक से अधिक महिलाओं तथा लड़कियों को जागरूक किए जाने की आवश्यकता है। गौरतलब है कि 28 मई को पूरी दुनिया में मासिक धर्म स्वच्छता दिवस मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं और लड़कियों को माहवारी के दौरान स्वच्छ रहने और साफ-सफाई के तरीके अपनाने के लिए जानकारी देना है।